जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अक्टूबर 2025 ।। अंक – 63 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

आपदा में घर वापसी, जीविका के सहयोग से शुरू किया स्वरोजगार (पृष्ठ – 02)

संघर्ष से सफलता तक प्रेरक यात्रा की मिसाल बनी रूबी (पृष्ठ – 03)

अवसर, आत्मविश्वास और सही दिशा से ज्योति ने भरी सपनों की उड़ान (पृष्ठ – 04)

दीदियों की हुनर को मिलेगी उड़ान, पोशाक सिलाई से होगी अच्छी कमाई

बिहार में महिला सशक्तीकरण और ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में जीविका लगातार सराहनीय कदम उठा रही है। इसी कड़ी में 38 जिलों में सिलाई प्रशिक्षण–सह–वस्त्र उत्पादन केंद्र की शुरुआत की गई है। इन केंद्रों के माध्यम से जीविका दीदियों को सिलाई का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया है ताकि वे आंगनवाड़ी केन्द्रों में नामांकित बच्चों के लिए पोशाक तैयार कर सकें। इस पहल से जीविका दीदियों के लिए स्थायी रोजगार का अवसर सृजित हुआ है।

गौरतलब है कि जीविका और समेकित बाल विकास योजना (आईसीडीएस) के बीच 1 जुलाई 2025 को एक एकरारनामा हुआ था। इस समझौते के तहत जीविका सम्पोषित सामुदायिक संगठनों के माध्यम से आंगनवाड़ी केन्द्रों में नामांकित बच्चों के लिए पोशाक उपलब्ध कराया जाएगा। इस पहल से न केवल बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण वस्त्रों की आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तीकरण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

इस समझौते के बाद 30,110 जीविका दीदियों को सिलाई का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसके लिए सात दिवसीय गैर–आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसे 534 बैचों में पूरा किया गया। प्रत्येक बैच में 25–25 दीदियों को शामिल किया गया। इस प्रकार प्रत्येक प्रखंड में ग्राम संगठन के माध्यम से 100 जीविका दीदियों का चयन उन्हें सिलाई के कार्य में हुनरमंद बनाया गया है। हालांकि इस कार्य के लिए चयनित महिलाएँ पहले से सिलाई का बुनियादी काम जानती थीं, लेकिन प्रशिक्षण दिलाकर उन्हें सिलाई कार्य में और अधिक दक्ष बनाया गया है और उनकी कौशल क्षमता को रोजगार के अवसर में परिवर्तित किया गया है।

इन प्रशिक्षणों में मास्टर प्रशिक्षकों द्वारा दीदियों को न केवल उन्नत तकनीक की जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें वस्त्र उत्पादन के तरीके भी सिखाए गए। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद 634 प्रखंडों में संकुल स्तरीय संघों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर सिलाई केंद्रों का संचालन किया जा रहा है। इससे ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें अपने गांव–घर में ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में मदद मिल रही है।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह प्रयास महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार लगातार ऐसे कदम उठा रही है जिससे ग्रामीण महिलाओं की प्रतिभा और हुनर को पहचान मिले। जीविका दीदियाँ पहले से ही स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं और अब उनकी रुचि और योग्यता के आधार पर उन्हें सिलाई केंद्रों से भी जोड़ा जा रहा है। इससे एक ओर जहां महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है वहीं उनका सामाजिक सम्मान भी बढ़ा है।

वर्तमान में पूरे बिहार में कुल 971 "जीविका दीदी का सिलाई घर" का संचालन किया जा रहा है, जिससे 26 हजार से अधिक दीदियों को रोजगार उपलब्ध हुई है। इस केंद्र के माध्यम से अब तक अनुसूचित जाति/जनजाति आवासीय विद्यालयों में बच्चों को पोशाक उपलब्ध कराया जा चुका है। यह पहल उन जीविका दीदियों के लिए भी आशा की नई किरण लेकर आई है, जो अपने हुनर को पहचान दिलाने और आर्थिक रूप से सशक्त बनने का सपना देख रही थीं। यह प्रयास ग्रामीण महिलाओं के लिए एक नई राह खोल रहा है। पहले जहां उनके हुनर का दायरा केवल घरेलू उपयोग तक सीमित था, वहीं अब यह उन्हें आय का साधन भी प्रदान कर रहा है। इसके साथ ही, सिलाई केंद्रों के संचालन से स्थानीय स्तर पर उद्यमशीलता की भावना को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। महिलाओं का आत्मनिर्भर बनना पूरे समाज के लिए प्रेरणादायक है।

''जीविका दीदी का सिलाई घर'' न केवल महिला सशक्तीकरण का प्रतीक है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ करने की दिशा में एक ठोस कदम भी है। यह पहल इस बात का प्रमाण है कि जब सामुदायिक संगठन मिलकर काम करते हैं, तो ग्रामीण महिलाओं की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव संभव हो पाता है।

आपदा में घर वापसी, जीविका के सहयोग से शुरू किया स्वरोजगार

पश्चिम चंपारण जिले के गौनाहा प्रखंड स्थित जमुनिया गाँव की नीतू देवी ने कोरोना महामारी के कठिन दौर में अपने हुनर को रोज़गार में बदलकर आत्मनिर्भरता की मिसाल कायम की है। वर्ष 2019 में जब कोरोना संकट के कारण उनके पति की नौकरी छूट गई थी। परिवार की मूलभूत जरूरतें पूरी करने में उनकी सारी जमा पूंजी भी समाप्त हो गई थी। इसके बाद उनके परिवार को दिल्ली से अपना गांव लौटना पड़ा।

ऐसे हालात में नीतू देवी को जीविका का सहारा मिला। गाँव लौटने के बाद नीतू देवी शक्ति जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। वह समूह की मदद से अपना स्वरोजगार शुरू करना चाहती थी, जिससे अपने परिवार का भरण–पोषण कर सके। दिल्ली में रहते हुए उन्हें केक बनाने का अनुभव था और इसी कौशल को उन्होंने गाँव में रोज़गार का जरिया बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने समूह से 10,000 रुपये का ऋण लेकर उन्होंने केक बनाने की सामग्री खरीदी और घर से ही केक बनाने का काम शुरू कर दिया। उनके स्वादिष्ट और गुणवत्तापूर्ण केक की मांग तेजी से बढ़ी और आसपास के लोग भी उनसे केक खरीदने लगे। धीरे–धीरे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और अपना कारोबार बढ़ाने लगीं। इसी बीच उन्हें जीविका के प्रोत्साहन एवं सहयोग से पी.एम.एफ.एम.ई. सीड कैपिटल योजना के तहत 40,000 रुपये की वित्तीय सहायता मिली। इसके बाद उन्होंने बाजार में एक छोटी दुकान खोली और समूह से दोबारा 50,000 रुपये का ऋण लेकर बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू किया।

नीतू की दुकान आज जमुनिया बाजार में अपनी पहचान बना चुकी है। नीतू देवी केवल केक ही नहीं, बल्कि बिस्कुट और पिज्ज़ा भी बनाकर बेचती हैं। उनकी दुकान से रोजाना औसतन 5,000 रुपये की बिक्री होती है और मासिक आय 40 से 45 हज़ार रुपये तक हो रही है। उनके पति भी व्यवसाय में उनका पूरा सहयोग करते हैं। अपनी बढ़ती आय से नीतू देवी ने न केवल अपने व्यवसाय का विस्तार किया है बल्कि मकान की मरम्मत और अपने बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही हैं। भविष्य में वह ऋण लेकर ब्रेड फैक्ट्री शुरू करना चाहती हैं ताकि अपनी आमदनी बढ़ाने के साथ समूह की अन्य दीदियों को भी रोजगार उपलब्ध करा सकें। नीतू देवी की सफलता की कहानी संघर्ष और आत्मविश्वास की प्रेरक मिसाल है।

जीविका का मिला सहारा, उद्यमिता से जीवन संवारा

रोहतास जिले के तिलौथ प्रखंड के हुरका पंचायत के हुरका गाँव की संगीता देवी आज एक सफल उद्यमी महिला के रूप में पहचानी जाती हैं। उनके परिवार में उनके पति और एक बेटा है। समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति बेहद खराब थी। वह शुरू से ही कुछ व्यवसाय करना चाहती थी, लेकिन गरीबी के कारण उनके पास पूँजी का अभाव था। उनके पति बाहर मजदूरी करके परिवार का भरण–पोषण करते थे, लेकिन कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन लगने से उनकी नौकरी छूट गई और परिवार पूरी तरह से आर्थिक तंगी की मार झेलने लगा। इससे संगीता देवी को अपने परिवार के भरण–पोषण की चिंता सताने लगी। उन्हें कहीं से कोई आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी। लेकिन ऐसी घड़ी में उन्हें जीविका ने सहारा दिया।

कठिन परिस्थिति के बीच, संगीता देवी को स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली। वह शक्ति जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं और समूह से 60,000 रुपये का ऋण प्राप्त किया। इस राशि से उन्होंने अपने पति के लिए पानीपुरी की दुकान और स्वयं के लिए श्रृगांर की दुकान शुरू की। धीरे–धीरे उनका व्यवसाय चलने लगा। इस व्यवसाय से होने वाली आय से उन्होंने समूह से लिए 60,000 रुपये की ऋण में से 40,000 रुपये की वापसी कर दी।

समूह से मिले सहयोग और उनकी मेहनत से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। अब वह अपने बच्चे को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही है। संगीता देवी ने अपनी आमदनी से अपने पति के लिए एक ऑटोरिक्शा भी खरीदा है, जिससे उनकी आय का एक और स्रोत सृजित हुआ है।

भविष्य में वह अपने श्रृंगार की दुकान को और बड़ा करना चाहती हैं। साथ ही वह किराना दुकान भी शुरू करने की योजना बना रही है। संगीता देवी कहती है कि जीविका के सहयोग से उनकी जिंदगी में बड़ा बदलाव आया है। इससे वह न केवल आत्मनिर्भर बनी है बल्कि महिला सशक्तीकरण का एक उदाहरण भी प्रस्तुत कर रही हैं।

संघर्ष से सफलता तक प्रेरक यात्रा की मिसाल बनी रूबी

समस्तीपुर जिले के कल्याणपुर प्रखंड के चाघरपुर ग्राम की रहने वाली रूबी देवी ने अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। उनके परिवार में चार सदस्य हैं। पहले की स्थिति काफी चुनौतीपूर्ण थी। उनके पति हाट–बाजार में कपड़े की फेरी करते थे, जिससे मात्र 6 से 7 हजार रुपये मासिक आमदनी होती थी। इस आय से परिवार का गुजर–बसर मुश्किल से होता था और बच्चों को अच्छी शिक्षा भी नहीं मिल पा रही थी।

इसी बीच, जीविका मित्र के माध्यम से रूबी दीदी को जीविका परियोजना की जानकारी मिली। उन्हें एक नई उम्मीद दिखाई दी और वह आशीष जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ गई। वह समूह की नियमित बैठकों में भाग लेने लगीं और बचत व पंचसूत्रा का पालन करने लगीं। समूह से उन्होंने 50 हजार रुपये का ऋण लिया और पति के साथ मिलकर कपड़े का कारोबार घर में ही शुरू किया। धीरे–धीरे कारोबार चल निकला और प्रतिदिन 200 से 300 रुपये की आमदनी होने लगी, जिससे परिवार को सहारा मिला।

व्यापार में सुधार देखकर रूबी ने हिम्मत दिखाई और ग्राम संगठन से दोबारा 2 लाख रुपये का ऋण लिया। इस राशि से उन्होंने स्थानीय चौक पर एक स्थायी कपड़े की दुकान खोली। दुकान की जिम्मेदारी खुद संभाली और इस काम में उनके पति ने भी सहयोग किया।

दुकान अच्छी तरह चलने लगी और प्रतिदिन 4 से 5 हजार रुपये की बिक्री होने लगी जिससे उन्हें प्रतिदिन 500 से 700 रुपये तक की कमाई हो जाती है। इस आमदनी से उन्होंने न केवल समूह से लिए ऋण की वापसी की बल्कि अपनी बचत से डेढ़ कट्ठा जमीन खरीदकर पक्का घर भी बनवाया है। रूबी अब अपने परिवार की मजबूती का स्तंभ बन चुकी हैं।

वर्त्तमान में उनकी मासिक आय 20 से 25 हजार रुपये हो गई है। वह बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिला रही हैं। जीविका से मिले सहयोग ने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से मजबूत बनाया है, बल्कि आत्मनिर्भर और सशक्त महिला के रूप में उन्हें एक पहचान भी दिलाई है।

उद्यमिता के सफर में कोमल ने कठोर संघर्ष से पाई सफलता

मधेपुरा जिले के गम्हरिया प्रखंड की कोमल कुमारी ने उद्यमिता के सफर में अपने कठोर संघर्ष से सफलता पाई है। उन्होंने जीविका के सहयोग से अपने जीवन को संवारा है। जीविका के प्रोत्साहन एवं वित्तीय सहयोग से वह एक सफल उद्यमी बनी है। हालाकि कोमल के पति व्यवसाय से जुड़े थे लेकिन पूँजी के अभाव में वह अपने व्यवसाय को आगे नहीं बढ़ा पा रहे थे। बाजार में मिल रही प्रतिस्पर्धा से उनका व्यवसाय दम तोड़ रहा था। ऐसी स्थिति में उनके व्यवसाय को एक सहारे की दरकार थी।

इसी बीच, कोमल कुमारी वर्ष 2020 में माही जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के बाद उन्हें प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के साथ–साथ वित्तीय सहयोग भी मिला। जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर कोमल ने नई शुरुआत की। समूह की बैठकों और प्रशिक्षणों से उन्हें व्यवसाय चलाने की समझ विकसित हुई। इसके बाद उन्होंने स्वयं सहायता समूह से 85,000 रुपये का ऋण लेकर अपने गाँव में मोबाइल की दुकान खोली। उन्होंने धीरे–धीरे दुकान का विस्तार किया इससे बिक्री बढ़ी और कमाई भी होने लगी।

कोमल कुमारी अब विभिन्न कंपनियों के मोबाइल फोन बेचती है। उन्होंने अपने व्यवसाय संचालन हेतु तीन लोगों को रोजगार भी दिया है। वह अपने इस व्यवसाय का प्रबंधन खुद संभालती है। अब उनकी मासिक आमदनी बढ़कर 60,000 से 70,000 रुपये तक पहुंच गई है। इस व्यवसाय से होने वाली अच्छी आय से वह अपने बच्चों को अच्छी तरह पढ़ा रही है। उन्होंने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया।

कोमल कहती है, 'जीविका ने उनके जीवन को नई दिशा दी है। समूह से मिले सहयोग और प्रोत्साहन से मैंने अपने व्यवसाय की शुरुआत की। आज मैं अपने व्यवसाय का अच्छी तरह से प्रबंधन कर रही हूँ और अपने परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त भी बना रही हूँ।' उद्यमिता अपनाने से कोमल की आर्थिक स्थिति बेहतर हुई है। साथ ही साथ उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और समाज में मान–सम्मान भी मिला है। आज वह पूरे प्रखंड में एक सफल महिला उद्यमी के रूप में जानी जाती हैं और अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी बनी हुई है।

अवसर, आत्मविश्वास और सही दिशा से ज्योति ने भरी सपनों की उड़ान

दरभंगा जिले के मनीगाछी प्रखंड के बाजीतपुर गाँव की ज्योति कुमारी आज महिला सशक्तीकरण और आत्मनिर्भरता की एक मिसाल बन चुकी हैं। शादी के बाद उन्हें लगने लगा था कि उनकी पढ़ाई–लिखाई और कंप्यूटर ट्रेनिंग अब बेकार साबित होगी और वे घर की चारदीवारी तक ही सीमित रह जाएँगी। लेकिन जब वह पार्वती जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं, तो उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। समूह की बैठकों और चर्चाओं ने उनके भीतर आत्मविश्वास को जगाया और उन्होंने महसुस किया कि अगर अवसर मिले तो वह अपने कौशल का उपयोग करके जीवन में कुछ कर सकती हैं।

इसी बीच, जीविका के माध्यम से बैंक ऑफ इंडिया में ग्राहक सेवा केंद्र (सीएसपी) संचालक की नियुक्ति के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए। ज्योति ने साहस दिखाते हुए आवेदन किया और उनका चयन हो गया। काली जीविका महिला ग्राम संगठन की ओर से उन्हें 50 हज़ार रुपये का हार्डवेयर सहयोग और 25 हज़ार रुपये मॉनिटरिंग के लिए उपलब्ध कराए गए। इससे न केवल उन्हें काम शुरू करने में मदद मिली बल्कि आसपास के समूहों और ग्रामीणों को भी बैंकिंग सेवाओं से जोड़ा गया। शुरुआती दौर में काम करना आसान नहीं था, क्योंकि ज्योति को बैंकिंग कार्यों का अनुभव नहीं था और ग्राहकों को सेवा देना चुनौतीपूर्ण लग रहा था।

इस कठिन समय में जीविका की ओर से उन्हें निरंतर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिला। उन्हें प्रशिक्षण के लिए पटना भी भेजा गया, जहाँ उन्होंने बैंकिंग कार्यों की बारीकियाँ सीखी। मेहनत और लगन से उन्होंने न केवल कार्य में दक्षता प्राप्त की बल्कि ग्राहकों का विश्वास भी जीता।

आज ज्योति का 'ग्राहक सेवा केंद्र' गाँव और आसपास के क्षेत्र के लोगों के लिए एक बड़ी राहत बन गया है। उनके केंद्र से प्रतिदिन 2 से 3 लाख रुपये की जमा–निकासी होती है। साथ ही इस केन्द्र द्वारा खाता खोलना, पैसे भेजना, बीमा सेवाएँ और अन्य बैंकिंग सुविधाएँ भी दी जाती हैं। अब लोगों को बैंक जाने के लिए लंबी दूरी तय करने या घंटों लाइन में खड़े रहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। गाँव की चौखट पर ही उन्हें सभी बैंकिंग सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। इससे न केवल ज्योति की पहचान बनी बल्कि गाँव के लोगों को भी वित्तीय सुविधा मिलना आसान हो गया है।

इस सफलता में उनके पति सुमित शर्मा का भी बराबर सहयोग रहा है। उन्होंने न केवल हर कदम पर ज्योति का साथ दिया बल्कि उनका उत्साह भी बढ़ाया। ज्योति ने अपने पति के अलावा ससुर को भी रोजगार से जोड़ दिया। ग्राहक सेवा केंद्र के परिसर में ही उन्होंने अपने ससुर से एक जनरल स्टोर खुलवाया है। बैंकिंग कार्यों के लिए आने वाले ग्राहक उसी दुकान से रोज़मर्रा का सामान भी खरीदता है, जिससे दुकान का कारोबार भी तेजी से बढ़ रहा है। एक ही स्थान पर बैंकिंग सेवा और जनरल स्टोर शुरू करने से इसके संचालन में मदद मिली। साथ ही परिवार की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

आज ज्योति और उनका परिवार हर महीने 50 हज़ार रुपये से अधिक की आय अर्जित कर रहा है। गाँव के लोग उन्हें आदर्श मानते हैं और उनकी मेहनत की सराहना करते हैं।

ज्योति कहती हैं कि उनकी सफलता का पूरा श्रेय जीविका परियोजना को जाता है। जीविका ने उन्हें अवसर, आत्मविश्वास और सही दिशा दी, जिसकी बदौलत न केवल वह आत्मनिर्भर बनीं बल्कि अपने परिवार को भी तरक्की की राह दिखाई है।

ज्योति ने जीविका के सहयोग, मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और वित्तीय मदद से ग्राहक सेवा केंद्र जैसे उद्यम की शुरुआत की। अपनी इस सफलता की वजह से आज वह महिला सशक्तीकरण एवं सामाजिक बदलाव की एक मिसाल बन गई है। वह अपने गाँव की उन तमाम महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं जो सपनों को हकीकत में बदलने का साहस रखती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार